श्री विधि संवृद्धि की राह

खरीफ की खेती का समय आ गया है. 25 मई से रोहिणी नक्षत्र शुरू होगा और राज्य भर के किसान खेतों की ओर रुख करेंगे. इस बार सरकार ने उत्पादन बढ़ाने के लिए श्रीविधि खेती पर फोकस किया है. राज्य में 35 लाख हेक्टेयर जमीन में इस साल धान की खेती होनी है. इस साल धान के उत्पादन का लक्ष्य 100 लाख टन रखा गया है. इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए 25 लाख हेक्टेयर जमीन में श्रीविधि से खेती की जानी है. यह बड़ा लक्ष्य है और सरकार ने इसकी भरपूर तैयारी की है. राज्य के ज्यादा से ज्यादा किसानों को श्रीविधि से धान की खेती के लिए प्रेरित किया जा रहा है. किसान भी उत्साहित हैं. श्रीविधि या उत्पादन का बड़ा लक्ष्य उनके लिए अब नया रहा. इससे पहले भी राज्य के किसानों ने इस विधि से खेती कर अधिकतम पैदावार का लक्ष्य प्राप्त किया है. सरकार इस बार भी किसानों को हर तरह की मदद समय पर उपलब्ध कराने की कार्ययोजना पर काम कर रही है. पेश है इस विषय पर केंद्रित रिपोर्ट.

बिहार के किसान और सरकार दोनों ही इस साल धान के रिकॉर्ड उत्पादन के लक्ष्य हो लेकर आशान्वित है. द्वितीय हरित क्रांति का फायदा राज्य के किसानों को मिल रहा है. इसलिए हर साल उत्पादन और श्रीविधि से धान की खेती का लक्ष्य तेजी से बढ़ रहा है. यह सब इसलिए हो पा रहा है कि राज्य में खेती के लिए परिस्थितियां अनुकूल हुई हैं. किसान जागरूक हैं और सरकार ग्रास रूट पर कार्ययोजना बना कर काम कर रही है.

लक्ष्य में 15 प्रतिशत वृद्धि

इस साल धान के उत्पादन लक्ष्य में 15 प्रतिशत की वृद्धि की गयी है. इस साल राज्य में 100 लाख टन धान का उत्पादन लक्ष्य है. वर्ष 2012-13 में यह लक्ष्य 85 लाख टन और 2011-12 में 81 लाख टन था. इस बार का उत्पादन लक्ष्य साहसिक है. अगर इस लक्ष्य को पूरा कर लिया गया, तो बिहार यह ऐतिहासिक उपलब्धि होगी.

श्रीविधि से खेती का बढ़ा दायरा

इस साल श्रीविधि से धान की खेती का दायरा भी करीब 3.33 गुणा ज्यादा किया गया है. पिछले वर्ष 7.5 लाख हेक्टेयर में श्रीविधि से धान की खेती हुई थी. इस बार 25 लाख हेक्टेयर में इस विधि से किसान खेती करेंगे.

सरकार की तैयारी मुकम्मल

खरीफ की खेती को लेकर सरकार की तैयारी मुकम्मल दिख रही है. सरकार ने 'श्री महाभियान' भी चलाया है. किसानों को श्रीविधि अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है. श्रीविधि से धान की खेती परंपरागत खेती से ज्यादा लाभकारी है, किसान इससे पहले से अवगत हैं. अब इस लाभ को हासिल करने के तरीके जान रहे हैं.

शिविर में बांटे गये खाद-बीज

सरकार ने प्रखंड स्तर पर शिविर लगा कर किसानों को खाद-बीज उपलब्ध कराया है. इसके लिए 10 मई से 20 मई तक का समय तय किया गया था. हालांकि इसका लाभ कितने प्रतिशत किसानों को मिल सका, इसका मूल्यांकन अभी बाकी है.

त्रिस्तरीय कार्यशाला का फायदा

श्री महाभियान के तहत सरकार ने खरीफ की खेती को लेकर त्रिस्तरीय कार्यशाला का आयोजन प्रमंडल, जिला और प्रखंड स्तर पर किया गया है. इसका लाभ इस साल कृषि को मिलेगा, यह उम्मीद की जा रही है.

पंचायतों में अब श्री दिवस

सरकार राज्य की खेती के पैटर्न को बदलना चाहती है, ताकि कम समय, कम भूमि और कम बीज में ज्यादा उत्पादन हो सके. इसमें श्रीविधि उपयुक्त साबित हुई है. अब सरकार इसे परंपरागत खेती के स्थान पर स्थापित करना चाहती है. इसलिए ग्रास रूट पर अभियान चलाया जा रहा है. 26 मई से नौ जून तक पंचायतों में श्री दिवस मनाया जायेगा. इसमें किसानों को श्रीविधि से वैज्ञानिक तरीके से धान की खेती के बारे में बताया जायेगा.

कहे घाघ सुन घाघिनी, खेती के ये बोल

घाघ के बारे में तो आप जानते ही हैं. वे त्रिकालदर्शी थे. उन्होंने कृषि को लेकर जो भविष्यवाणियां कीं, वह आज भी सही होती हैं. उनकी कृषि कहावतों को कृषि वैज्ञानिक भी सम्मान देते हैं. हम खेती पर चर्चा कर रहे हैं, तो घाघ की कहावतों को भला कैसे छोड़ सकते हैं. कृषि कहावतें भड्डरी के नाम की भी मिलती हैं. विद्वानों की राय है कि घाघ और भड्डरी एक ही हैं.

बैशाख

अखै तीज तिथि के दिना,
गुरु होवै सजूत ।
तो भाखै यों भड्डरी,
उपजै नाज बहूत ।।
(बैशाख में अक्षय तृतीया के दिन वृहस्पतिवार हो तो अन्न बहुत पैदा होगा).

ज्येष्ठ

जेठ अंत तिथि रात में, रहे घटा जो छाय ।
भड्डरी तेहि वर्ष तब, जल दे धरणी बहाय ।।
(जेठ मास की आखिरी तिथि की रात में यदि आकाश बादल से आच्छादित रहे, तो उस वर्ष खूब वर्षा होगी).
जेठ मास जो तपै निराशा ।
तो जानो वर्षा की आशा ।।
(जेठ महीने में जितनी गरमी पड़ेगी, बरसात में उतनी ही अधिक वर्षा होगी).
उतरत जेठ जो बोले दादुर।
कहे भड्डरी बरसै बादर ।।
(जेठ महीने के अंत में दादुर (मेढ़क) बोले, तो उस साल वर्षा अधिक होगी).

अषाढ़

आगे रवि पीछे मंगल होवे यदि आषाढ़ ।
''भड्डी'' उस वर्ष सर्वत्र, अनाज की हो बाढ़ ।।
(जिस वर्ष आषाढ़ मह में आगे सूर्य और पीछे मंगल हो, उस वर्ष अन्न की पैदावार बहुत अधिक होगी).
दसैं आसाढ़ी कृष्ण की,
मंगल रोहिनी होय ।
सस्ता धान बिकाय है,
हाथ न छुइहैं कोय ।।
(आषाढ़ मास के कृष्ण-पक्ष में दशमी को मंगलवार रहे और उस दिन रोहिणी नक्षत्र पड़ जाये, तो धान की पैदावार बहुत अधिक होगी).
आसाढ़ मास अठवीं अधियारी, जो निकले चंदा जल धारी ।
चंदा निकले बादल फोड़, साढ़े तीन मास बरखा का जोर ।।
(आषाढ़ बदी अष्टमी को यदि चंद्रमा बादल से निकले, तो साढ़े तीन महीना खूब वर्षा होगी).
सुदि आषाढ़ मकी पंचमी, गरज धमधमो होय ।
तो यों भाखे भड्डरी, मधुरी मेधा जोय ।।
(आषाढ़ शुक्ल पंचमी को बिजली चमके, तो वर्षा अच्छी होगी).
आषाढ़-पुन-परवा गाजे ।
तो दिनों बहत्तर बाजे ।।
(यदि आषाढ़ पूर्णिमा और प्रतिपदा को बिजली चमकते, तो बहत्तर दिनों तक वृष्टि होगी).

सावन बदी एकादशी, जितनी घड़ी की होय ।
तितनों संवत निपजे, चिंता करो न कोय ।। (सावन बदी एकादशी जितनी घड़ी की होगी, उतने ही सेर की दर से अनाज बिकेगा. चिंता करना व्यर्थ है)